अंक - 03, माह - मार्च, 2026

प्रगाथा

शिक्षा की प्रगतिशील गाथाएँ

छात्र गाथा
स्मृति कुमारी, मोहनपुर, बेगूसराय

शिक्षक गाथा
मृदुला सिन्हा, औरंगाबाद

विद्यालय गाथा
उत्क्रमित मध्य विद्यालय अजगरवा पूरब, पूर्वी चंपारण

अधिकारी गाथा
समीर परिमल, पटना

होली की झलकियां

प्रगाथा

अनुक्रम

संपादक

सीमा कुमारी

छात्र गाथा

स्मृति कुमारी
पूर्व छात्रा मध्य विद्यालय
मोहनपुर

शिक्षक गाथा

मृदुला कुमारी सिन्हा
सिंदुआर, औरंगाबाद

विद्यालय गाथा

उत्क्रमित मध्य विद्यालय अजगरवा
पूर्वी चंपारण

अधिकारी गाथा

समीर परिमल
राज्य कर उपायुक्त
वाणिज्य कर विभाग

कविता

गुरु की महत्ता
खुशबू कुमारी
मध्य विद्यालय बलुआचक
भागलपुर

विशेष सहयोग

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा0 उ0 म0 वि0 दुधहन,
रघुनाथपूर, सीवान

अस्वीकरण

- "प्रगाथा" ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कविताएँ, विचार एवं अन्य सामग्री उनके संबंधित लेखकों/रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। इनसे "टीचर्स ऑफ बिहार" या संपादकीय मंडल की सहमति अनिवार्य रूप से प्रतिबिंबित नहीं होती है।
- यदि किसी भी सामग्री से किसी व्यक्ति, संस्था या समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुँचती है, तो इसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं होगा।
- इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का किसी भी रूप में पुनर्प्रकाशन, प्रतिलिपि या उपयोग बिना पूर्व अनुमति के वर्जित है।
- संपादकीय मंडल को सामग्री में आवश्यकतानुसार संपादन, संक्षेपण या संशोधन करने का अधिकार सुरक्षित है।

संपादकीय

प्रिय पाठकों

प्रगाथा " शिक्षा की प्रगतिशील गाथाएँ " का तीसरा अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। मार्च का यह अंक होली की रंग बिरंगी छटाओं से लबरेज है।

इस अंक में पूर्व की भांति छात्र, शिक्षक एवं विद्यालय गाथा प्रकाशित की गई है। लेकिन इस श्रृंखला में एक कड़ी और जोड़ दी गई है।

अधिकारी गाथा में हम उन अधिकारियों की कहानियां लिखेंगे जो एक सर्वश्रेष्ठ छात्र एवं शिक्षक रहे हों या शिक्षा के प्रति उनका विशेष अनुराग हो या विशेष योगदान हो।

छात्र गाथा में स्मृति कुमारी मध्य विद्यालय मोहनपुर की छात्रा से मिलेंगे जिन्होंने यूपीएससी की सर्वाधिक लोकप्रिय एवं कठिन प्रतियोगिता परीक्षा पास कर अनुवाद अधिकारी बन कर अपने पहली तनख्वाह से अपने प्राथमिक विद्यालय में पचास हजार रुपये का योगदान दिया। शिक्षक गाथा में औरंगाबाद जिले की मृदुला कुमारी सिन्हा हैं जिन्होंने लेट्स इंस्पायर मानक अवार्ड को ही अपना जुनून बना लिया है।

विद्यालय गाथा में उत्क्रमित मध्य विद्यालय अजगरवा की दास्तान है। अधिकारी गाथा में हम एक ऐसे अधिकारी से मिलेंगे जिन्होंने अपने शिक्षकत्व दायित्व निभाते हुए बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा को उतीर्ण करने के सपने देखते रहे और वह सपना 26 वर्षों के बाद साकार हुआ।

मुझे उम्मीद है कि आप इन सबकी कहानियों से कुछ न कुछ प्रेरणा अवश्य लेंगे। अगर एक भी पाठक इसे पढ़कर अपने जीवन में कुछ बदलाव ला सके तो यह हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

टीचर्स ऑफ बिहार की पूरी टीम आप सबको होली और ईद की बहुत बहुत शुभकामनाएं प्रेषित करती है।

संपादक
.. सीमा कुमारी
राजकीयकृत मध्य विद्यालय, बीहट
Seema kumari

छात्र गाथा

स्मृति कुमारी
पूर्व छात्रा मध्य विद्यालय मोहनपुर
बेगूसराय (बिहार)

उसे गुमां है कि मेरी उड़ान कुछ कम है
मुझे यकीं है कि ये आसमां कुछ कम है...

यहां का सरकारी स्कूल न केवल पढ़ाई, बल्कि एक अनोखी परंपरा की वजह से पूरे बिहार में मशहूर है. इस गांव के सफल छात्र अपनी पहली सैलरी स्कूल को दान करते हैं

बिहार के बेगूसराय जिले के एक छोटे से गांव मोहनपुर ने वह कर दिखाया, जो बड़े शहरों के नामी स्कूल भी नहीं कर पाए. यहां का सरकारी स्कूल न केवल पढ़ाई, बल्कि एक अनोखी परंपरा की वजह से पूरे बिहार में मशहूर है. इस गांव के सफल छात्र अपनी पहली सैलरी स्कूल को दान करते हैं और समृद्ध लोग लाखों रुपये देकर स्कूल की व्यवस्था को मजबूत करते हैं. पिछले 5 साल में गांव वालों ने 40 लाख रुपये से ज्यादा का दान दिया, जिससे यह स्कूल बिहार का सबसे उत्कृष्ट सरकारी स्कूल बन गया है।

गांववाले बताते हैं कि यह परंपरा पिछले 10 साल से चल रही है. उनका मानना है कि मंदिर में दान से बड़ा पुण्य शिक्षा में दान है. इस सोच के साथ हर पीढ़ी स्कूल को बेहतर बनाने में जुटी है. गांव के शिक्षित और समृद्ध लोग मुफ्त में पढ़ाते हैं और सरकारी शिक्षकों की मदद करते हैं. नतीजा, इस स्कूल के छात्र हर साल सरकारी नौकरियों में चुने जा रहे हैं. गांव वाले कहते हैं, "शिक्षा मजबूत होगी तो बाकी सब अपने आप सुधर जाएगा."

बच्चों को प्रेरित करती परंपरा

सफल छात्र के पिता संतोष कुमार ने बताया कि महानपुर की यह परंपरा बच्चों को प्रेरित करती है. यहां पढ़ने वाला हर छात्र नौकरी मिलने पर अपनी पहली सैलरी स्कूल को दान करता है. अब तक हाई स्कूल को लाखों रुपये मिल चुके हैं और मिडिल स्कूल बिहार का नंबर वन बन गया है. पूर्व छात्र अमरजीत कुमार राय कहते हैं कि उन्होंने भी इस परंपरा को निभाया और गर्व महसूस किया. दुर्गेश कुमार के अनुसार, इस स्कूल की सुविधाएं और अनुशासन निजी स्कूलों को भी मात दे रहे हैं.

स्मृति की कहानी उन्ही की जुबानी

मैंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा मध्य विद्यालय मोहनपुर से फिर उच्च विद्यालय मोहनपुर से दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त की।

12वीं DAV से, स्नातक यानी ग्रैजुएशन काशी हिंदू विश्वविद्यालय (BHU)से, परास्नातक यानी पोस्ट ग्रैजुएशन जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय(जेएनयू) तथा PHD की उपाधि पुनः काशी हिंदूविश्वविद्यालय से प्राप्त की है।

मैं निम्न मध्यम वर्गीय परिवार से आती हूं। सबका अपना अपना संघर्ष होता है और उसकी स्थिति से हमारा समाज वाक़िफ ही है। मेरे दो भाई हैं।

मैंने देश के बड़े और ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की, वहां अपनी जगह बना पाई तो उसका श्रेय मेरे प्रारंभिक विद्यालय के गुरुओं को जाता है क्योंकि नींव जितनी अच्छी होगी,इमारत उतना ही शानदार।

वर्तमान में मेरी पोस्टिंग UPSC के माध्यम से कर्मचारी भविष्य निधि संगठन के हेड ऑफिस में हुई है और यहां मैं अनुवाद अधिकारी के रूप में कार्यरत हूं।

विद्यार्थियों के लिए मेरा यही सुझाव है कि जो भी करें तन्मयता और धैर्य के साथ करें तो मंजिल तक पहुंचने से कोई नहीं रोक सकता है। साथ ही मैं मध्य विद्यालय मोहनपुर का तहे दिल से शुक्रिया अदा करना चाहती हूं क्योंकि इस विद्यालय ने हमारे जैसे बहुतों बच्चों को उड़ान भरना सिखाया और आगे में इस दिशा में उपलब्धि हासिल करते रहें ,यही कामना है।

स्मृति कुमारी मोहनपुर मध्य विद्यालय में सम्मानित होती हुई।

वर्तमान में मैं जिस पद पर हूं,उसे पूरी ईमानदारी से निभा रही हूं और कार्यालय के माहौल से संतुष्ट भी हूं।लेकिन मेरी पढ़ाई लिखाई अभी जारी है, मैं सिविल सेवा की तैयारी कर रही हूं और साथ ही अकादमिक जगत में जाने के लिए भी अपना रास्ता खुला रखा है।

स्मृति कुमारी
अनुवाद अधिकारी
कर्मचारी भविष्य निधि संगठन

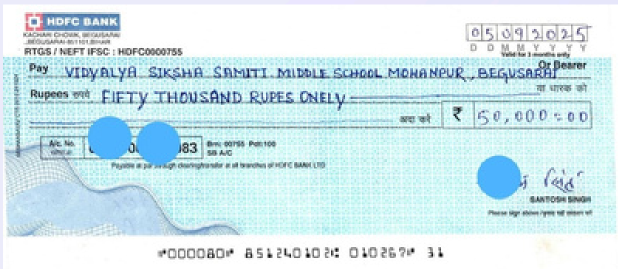

खबरों में स्मृति कुमारी

दैनिक भास्कर

बेगूसराय 10-09-2025

वादा निभाया • यूपीएससी से चयनित अनुवादक स्मृति ने एचएम से कहा था, नौकरी लगी तो पहली सैलरी स्कूल को दूंगी

नौकरी लगी तो पहली सैलरी अपने स्कूल को किया भेंट

सिटीरिपोर्टर | बेगूसराय

गांव के जिस सरकारी स्कूल से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की नौकरी लगी तो अपने बचपन के विद्यालय को अपनी पहली सैलरी पचास हजार देकर अनूठी मिशाल पेश की है। दरअसल मोहनपुर गांव की रहने वाली संतोष सिंह की पुत्री स्मृति यूपीएससी द्वारा चयनित होकर भारत सरकार के मंत्रालय में अनुवादक के पद पर कार्यरत हुइ। गांव के सरकारी स्कूल मध्य विद्यालय मोहनपुर से प्रारंभिक शिक्षा हासिल करने वाली स्मृति ने बचपन से ही मेधावी छात्रा थी, उसने बचपन में ही अपने प्रधानाध्यापक से विनय कुमार से वादा की थी कि जब उसे नौकरी मिलेगी तो पहली सैलरी विद्यालय को देगी। इस वादे के करीब 13 वर्ष से बाद स्मृति ने ना सिर्फ अपना वादा निभाया बल्कि अन्य बच्चों में भी अपने बचपन के स्कूलों के प्रति कृतज्ञता का भाव जगाई है। स्मृति बताती हैं कि सफलता का असली अर्थ सिर्फ ऊंचाई पाना नहीं, बल्कि अपनी जड़ों से जुड़े रहना और उन्हें मजबूत करना भी है।

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित स्मृति

छात्रा की यह पहल अन्य छात्रों को भी प्रेरित करेगी

इस संबंध में विद्यालय के प्रधानाध्यापक विनय कुमार ने बताया कि उनके विद्यालय की पूर्व छात्रा स्मृति कुमारी, जिसने अपने सपनों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत भी की और अपने विद्यालय को दिए गए वचन को भी निभाया। नौकरी लगने के बाद प्रथम वेतन से 50000 की राशि प्रदान की है, जिसे उनके पिता संतोष सिंह ने चेक के माध्यम से राशि प्रदान की है। उन्होंने बताया कि यह उनके प्रारंभिक विद्यालय के प्रति उनकी गहरी कृतज्ञता का प्रमाण है। साथ ही बताया कि उन्हें विश्वास है कि छात्रा की यह पहल अन्य छात्रों को भी प्रेरित करेगी और विद्यालय की विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगी।

पहली से 8वीं तक की पढ़ाई मध्य विद्यालय मोहनपुर से की थी

ज्ञात हो कि स्मृति कुमारी वर्ग प्रथम से अष्टम तक की पढ़ाई मध्य विद्यालय मोहनपुर से की थी। इसके बाद वर्ष 2012 में अष्टम वर्ग की परीक्षा उत्तीर्ण करने के साथ राष्ट्रीय आय सह मेधा छात्रवृत्ति परीक्षा 2012 में भी सफलता प्राप्त की। साथ ही बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से स्नातक, जेएनयू नई दिल्ली से स्नातकोत्तर तथा पीएचडी की उपाधि अर्जित करने के उपरांत संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित अनुवादक पदाधिकारी की परीक्षा 2024 में सफलता अर्जित कर भारत सरकार के मंत्रालय में अनुवादक के पद पर कार्यरत है। स्मृति अभी अन्य प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रही है। प्रधानाध्यापक विनय कुमार ने बताया कि प्रारंभिक विद्यालय में अध्ययनरत रहते हुए स्मृति ने अपने प्रथम वेतन का एक महत्वपूर्ण अंश विद्यालय को देने का वचन दी थी। यह इसलिए भी आनंद का विषय है कि क्योंकि स्मृति के पिता एक साधारण किसान हैं। साथ ही बताया राशि को विद्यालय शिक्षा समिति के खाते में जमा कर दी गई। जिस विद्यालय के विकास में खर्च की जाएगी।

www.jagran.com

अधिकारी बनने के बाद पहले वेतन से विद्यालय को दिए पचास हजार

एचएम ने इंटरनेट पर साझा किया तो लोग मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहे

मो. हालिद • जागरण

बेगूसराय : सरकारी स्कूल से प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करने का कृतज्ञता भाव ऐसा कि एक बेटी यूपीएससी परीक्षा पास कर कर्मचारी भविष्य निधि संगठन के मुख्यालय में अनुवाद अधिकारी बनी तो पहले वेतन का अंशदान स्कूल के उन्नयन के लिए किया। उसके भेजे पचास हजार रुपये का चेक लेकर पिता विद्यालय पहुंचे तो सारे शिक्षक भावुक हो गए। गर्वित भी हुए कि पूर्ववर्ती छात्रा अब अपने कनिष्ठों के बारे में सोच रही है।

यह छात्रा सदर प्रखंड के मोहनपुर के संतोष कुमार की पुत्री स्मृति हैं। स्कूल के प्रधानाध्यापक विनय कुमार ने पूर्ववर्ती छात्रा के इस कृतज्ञ भाव, सोच और योगदान को इंटरनेट पर साझा किया है। जिसकी लोग मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहे हैं। उसने पहली से आठवीं तक की पढ़ाई आदर्श राजकीयकृत मध्य विद्यालय मोहनपुर से पूरी की। यहां से 2012 में उत्तीर्ण होकर उच्च विद्यालय मोहनपुर से दसवीं की, फिर डीएवी से 12वीं, काशी हिंदू विश्वविद्यालय से स्नातक, जेएनयू से पीजी करने के पश्चात पुनः हिंदू वि. से पीएचडी की। साथ ही यूपीएससी की तैयारियां भी करती रही। अभी वह अनुवाद अधिकारी हैं, परंतु आगे की तैयारियों में भी लगी हुई हैं।

'मेरा विद्यालय कैसा हो', इस पर भाषण प्रतियोगिता हुई थी स्मृति ने राज्य में दूसरा स्थान प्राप्त किया था

स्मृति कुमारी

बाल संसद की प्रधानमंत्री थी स्मृति : स्मृति के समय में स्कूल के शिक्षक रहे और वर्तमान में मध्य विद्यालय चौरिया बरियारपुर के एचएम संजय कुमार ने बताया कि स्कूल से आधा किलोमीटर की दूरी पर स्मृति का घर है। वह प्रतिदिन समय पर स्कूल पहुंच जाती थी, वह स्कूल के बाल संसद की प्रधानमंत्री भी थी। पढ़ने में तेज, अनुशासित और मानवतावादी थी। मैं स्मृति के साथ ही पांच अन्य बच्चों को लेकर शिक्षा दिवस पर 11 नवंबर 2011 को पटना के गांधी मैदान गया था। यहां 'मेरा विद्यालय कैसा हो', इस पर भाषण प्रतियोगिता हुई थी, स्मृति ने राज्य में दूसरा स्थान प्राप्त किया था। स्मृति के साथ पटना जाने वाले आदर्श कुमार बीपीएससी शिक्षक हैं, दूसरे गौतम कुमार कटिहार के मत्स्य पालन पदाधिकारी, तीसरी कविता कुमार एनआइटी इंजीनियर और चौथी कोमल कुमारी आइटीआइ कर चुकी हैं।

स्मृति ने बच्चों को दिया सुझाव : विद्यार्थियों के लिए मेरा यही सुझाव है कि जो भी करें तन्मयता और धैर्य के साथ करें तो मंजिल तक पहुंचने से कोई नहीं रोक सकता है।

नींव मजबूत थी, इसलिए सफल हुई

दैनिक जागरण से दूरभाष पर बातचीत में स्मृति कुमारी ने बताया कि मैंने देश के बड़े और ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की, वहां अपनी जगह बना पाई तो उसका श्रेय मेरे प्रारंभिक विद्यालय के गुरुओं को जाता है, क्योंकि नींव जितनी अच्छी होगी, इमारत उतना ही मजबूत होगी। मेरी नींव मोहनपुर स्कूल के गुरुओं ने ही मजबूत बनाई थी, इसका आज मुझे फल मिला है। इसमें माता-पिता और भाइयों का सहयोग महत्वपूर्ण रहा है।

शिक्षक गाथा

मृदुला सिन्हा

मध्य विद्यालय सिंदुआर, दाउदनगर
औरंगाबाद

ख़ुदी को कर बुलंद इतना कि हर तक़दीर से पहले ख़ुदा बंदे से ख़ुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है

मैं मृदुला कुमारी सिन्हा, एक इंसान के बाद सर्वप्रथम एक शिक्षक, जिसका प्रमुख उद्देश्य सिर्फ अपने बच्चों का सर्वांगीण विकास है। हर पल आंखों के सामने वह क्षण रहता है, जब 2014 में मैंने विद्यालय में योगदान किया था। उस समय बस यही जज्बा था कि मुझे इस यात्रा में एक अंतिम निशान छोड़ जाना है।

पर मेरी इस शिक्षण यात्रा की वास्तविक शुरुआत दिसंबर 2018 से हुई, जब मैं एक कार्यशाला के दौरान जन शिक्षा निदेशक गालिब सर से हुई। इस कार्यशाला ने मेरी शिक्षण शैली को पूरी तरह बदल दिया। किताबी ज्ञान से परे मेरी शिक्षण शैली बदलकर गतिविधि-आधारित शिक्षण हो गई।

आज जब पुरानी बातें याद आ रही हैं तो सबसे पहले याद आ रहा—अपने बच्चों की उपलब्धि, क्योंकि किसी शिक्षक की सफलता उसके विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर निर्भर करती है।

मेरे विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ —

i) वर्ष 2025 में पहली बार कक्षा VIII की छात्रा पूनम कुमारी ने राष्ट्रीय आय सह मेधा छात्रवृत्ति (NMMS) में सफलता प्राप्त किया।

ii) वर्ष 2025 में ही बिहार दिवस में आयोजित जिला स्तरीय पेंटिंग प्रतियोगिता में कक्षा V के बिनय कुमार ने प्रथम तथा क्विज प्रतियोगिता में कक्षा V के गौतम कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

iii) 2025 के प्रारंभ में ही कक्षा VIII की रूबी कुमारी का चयन इंस्पायर अवार्ड के लिए हुआ।

ये सारी सफलताएँ सिर्फ इस एक वर्ष के लिए ही सीमित नहीं है, बल्कि ये सब विगत कुछ वर्षों से हो रहा है।

iv) वर्ष 2024 में कक्षा VIII की छात्रा सपना कुमारी ने जिला स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सितंबर 2024 में कक्षा VI के छात्र प्रेमराज कुमार ने राज्य स्तरीय विज्ञान सेमिनार में भाग लिया, वहीं इंस्पायर मानक के जिला स्तरीय प्रदर्शनी में चयनित प्रिंस कुमार ने राज्य स्तरीय प्रदर्शनी में भाग लिया।

बच्चे अपने अपने आईडिया बॉक्स में डिस्कस करते हुए

इसके पूर्व 2021-22 में दो विद्यार्थियों का चयन इंस्पायर मानक हेतु हुआ।
ये जितनी भी सफलताएँ मेरे विद्यार्थियों को मिली, कोई एक दिन की मेहनत का परिणाम नहीं था, बल्कि वर्षों की कड़ी मेहनत का फल है।
आज भी वह दिन याद आ रहा जब फरवरी 2014 में मैंने विद्यालय में योगदान किया था। उस समय मैंने पाया कि मेरा विद्यालय एक ऐसे पिछड़े और ग्रामीण इलाके में अवस्थित है, जहाँ सिर्फ गरीबी और अशिक्षा है और मेरे विद्यार्थी समाज से पूरी तरह कटे हुए थे। यहाँ शिक्षा और बदलाव की कोई गुंजाइश नहीं थी।
पर, मैं बदलाव के लिए दृढ़संकल्पित थी। इसलिए मैंने हार नहीं मानी। मैंने सतत प्रयास किया, पर D.El.Ed. करने हेतु पुनः दो वर्ष के लिए विद्यालय से दूर चली गई।
2018 में वापस आने के बाद मैं गालिब सर के सम्पर्क में आयी और मैंने धीरे-धीरे विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना शुरू किया। शुरुआत विज्ञान में Hands on गतिविधियों से हुई जिसे बाद में Minds on में मैंने परिवर्तित किया जिसके कारण विद्यार्थियों ने अवलोकन करना और विचार करना शुरू किया और साथ ही, आस-पास होने वाली किसी भी घटना के लिए होने वाले वैज्ञानिक कारणों को ढूँढना शुरू किया।

> वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के बाद मैंने धीरे-धीरे उन्हें नवाचार की तरफ मोड़ना शुरू किया जिसका परिणाम 2021-22 में इंस्पायर मानक हेतु दो विद्यार्थियों का चयन था।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के बाद मैंने धीरे-धीरे उन्हें नवाचार की तरफ मोड़ना शुरू किया जिसका परिणाम 2021-22 में इंस्पायर मानक हेतु दो विद्यार्थियों का चयन था। इस सफलता ने मेरा उत्साह बढ़ाया और मैंने अन्य विद्यालय के छात्रों को भी मार्गदर्शन देना शुरू किया। अभी वर्तमान में मैं इंस्पायर के जिला तकनीकी टीम के सदस्य के रूप में समस्त जिले का मार्गदर्शन करती हूँ। नवाचार के लिए मेरे द्वारा किए गए कार्यों को संक्षिप्त रूप में कुछ इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है-

इंस्पायर मानक में 3 चयन

जिला तकनीकी टीम के सदस्य के रूप में इंस्पायर मानक हेतु मार्गदर्शन के लिए दो कार्यशाला का आयोजन

जनवरी 2023 में STEM के विकास हेतु IISER PUNE में दस दिवसीय कार्यशाला में मैंने भाग लिया।

2020 में दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया में Innovation Pedagogy पर सात-दिवसीय कार्यशाला में भी भाग लिया।

विद्यालय में Idea Box बनवाया जिसमें बच्चे अपने नवाचारी आइडिया डालते हैं। इस समाचार को शिक्षा विभाग द्वारा फेसबुक पर साझा किया गया।

विद्यालय स्तर पर दो विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

बिहार दिवस 2023 और 2025 के दौरान बड़ी संख्या में विद्यार्थियों के समक्ष विज्ञान की गतिविधियाँ कर उन्हें विज्ञान के प्रति जागरूक और प्रेरित किया।

IISER PUNE की Principal Technical Officer Shanti Pise के द्वारा लंदन से Online class लिया गया जिसमें उन्होंने बच्चों में विज्ञान और गणित के प्रति रुचि विकसित की।

सम्मान

इंस्पायर मानक हेतु उत्कृष्ट कार्य करने के लिए जिला स्तरीय दो पुरस्कार प्राप्त हुए।
15 अगस्त 2023 को उत्कृष्ट शिक्षण कार्य हेतु जिला पदाधिकारी द्वारा सम्मानित।
शिक्षक दिवस 2023 को शिक्षा विभाग की तरफ से सर्वश्रेष्ठ नवाचारी शिक्षक का सम्मान।
IISER पुणे की तरफ से इंस्पायर मानक हेतु उत्कृष्ट कार्य करने के लिए 3 सितम्बर 2024 को iRA Award।
5 सितम्बर 2024 को राजकीय शिक्षक पुरस्कार

कुछ अन्य कार्य -
IISER PUNE की टीम का 13 जून 2024 में विद्यालय में आगमन, बच्चों के साथ वैज्ञानिक गतिविधि तथा उनके document हेतु मेरा साक्षात्कार।
NCERT द्वारा Art Integrated Learning पर बनी हस्तपुस्तिका में सहयोग करना।
दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय में NCF निर्माण हेतु कार्यशाला में भाग लेना।
भूतपूर्व ACS दीपक सर द्वारा लिखित आलेख में मेरे कार्यों की सराहना।
मेरे श्यामपट्ट कार्य को शिक्षा विभाग द्वारा साझा करना।
3 e-content का निर्माण, जिसे Science is Fun के तहत DIKSHA के लिए निर्मित किया गया।
मेरे द्वारा बनाए गए TLM का प्रस्तुतीकरण माननीय मुख्यमंत्री की समाधान यात्रा 2023 के दौरान किया गया।
वर्ष 2025 में माननीय मुख्यमंत्री की प्रगति यात्रा के दौरान मेरे दो छात्रों ने अपने विज्ञान के projects को प्रस्तुत किया।

नवाचार के क्षेत्र में कुछ विशिष्ट कदम:-
इंस्पायर मानक जो मेरा जुनून बन चुका है और यह नवाचार को प्रेरित करता है, इसके लिए पिछले कुछ वर्षों से लगातार कार्य कर रही हूँ।
यह कार्य सिर्फ अपने विद्यालय के बच्चों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि जिला के अन्य बच्चों को भी नवाचार हेतु मार्गदर्शन दे रही। अब यह कार्य जिला तक ही सीमित न होकर विभिन्न राज्यों तक पहुँच गया है। IISER Pune के माध्यम से मुझे झारखंड और लद्दाख के शिक्षकों को online इंस्पायर अवार्ड के सम्बंध में जानकारी देने का अवसर प्राप्त हुआ।
इन सारे अनुभवों के आधार पर इंस्पायर से सम्बंधित समस्त जानकारी को मैंने हिन्दी में एकत्रित किया और एक document बनाया जिसे बिहार के शिक्षकों के बीच भेजा गया।
मेरे कार्य सिर्फ विज्ञान तक ही सीमित नहीं रहे हैं बल्कि मैंने अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य किया। बच्चे आज जो नवाचार कर रहे हैं, उसकी नींव तैयार किया मैंने शनिवार को। प्रत्येक शनिवार की गतिविधि को मैंने Super Saturday नाम दिया और उन्हें art & craft का प्रशिक्षण देना शुरू किया। Origami से तरह-तरह की आकृतियाँ बनाना, clay art, कबाड़ से जुगाड़... आदि के कारण जो बच्चे पहले कागज को सही से मोड़ना नहीं जानते थे, वे तरह-तरह के project बनाने लगे।
बच्चों को समाज के प्रति जागरूक करने का कार्य भी किया जिसमें वे नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जागरूकता फैलाते हैं।
किशोरावस्था और मासिक धर्म जैसे विषयों पर भी कार्य करके उन्हें समस्त जानकारी दी और उनके मिथक को दूर करने का प्रयास किया।
अभी वर्तमान में मैं फरवरी 2024 से विद्यालय प्रभारी के रूप में कार्य कर रही हूँ और तब से विद्यालय की मूलभूत सुविधाओं और आधारभूत संरचना पर लगातार कार्य कर रही।

> ***Pageयह कार्य सिर्फ अपने विद्यालय के बच्चों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि जिला के अन्य बच्चों को भी नवाचार हेतु मार्गदर्शन दे रही। अब यह कार्य जिला तक ही सीमित न होकर विभिन्न राज्यों तक पहुँच गया है। IISER Pune के माध्यम से मुझे झारखंड और लद्दाख के शिक्षकों को online इंस्पायर अवार्ड के सम्बंध में जानकारी देने का अवसर प्राप्त हुआ। 69***

इसकी प्रगति हेतु मैंने HDFC बैंक से सम्पर्क किया और विद्यालय में स्मार्ट क्लास लगवाने हेतु आवेदन किया। मेरे आवेदन को स्वीकृत करते हुए HDFC और RGVN के सौजन्य से मेरे विद्यालय में BALA पेंटिंग करवाई गई। साथ ही, स्मार्ट क्लास, पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला स्थापित की गई। स्वच्छ जल हेतु water cooler भी लगवाया गया।
यह यात्रा यहीं तक खत्म नहीं हुई है। अभी भी परिवर्तन के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ और आधारभूत संरचना में सुधार के साथ-साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु निरन्तर प्रयत्नशील हूँ।

विद्यालय गाथा

उत्क्रमित मध्य विद्यालय अजगरवा पूरब
पकड़ीदयाल, जिला - पूर्वी चंपारण
बिहार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय

अजगरवा पूरब ब्लॉक - पकड़ीदयाल,

वाक़िफ़ कहाँ ज़माना हमारी उड़ान से ।
वो और थे जो हार गए आसमान से।

दो कमरों का एक ऐसा विद्यालय जिसके बच्चे सफल हो रहे हैं कई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में।
जी हां, टीचर्स ऑफ बिहार के विद्यालय गाथा में आज हम बात कर रहे हैं पूर्वी चंपारण जिले के उत्क्रमित मध्य विद्यालय अजगरवा पूरब ब्लॉक - पकड़ीदयाल,
जिला - पूर्वी चंपारण की।
वाक़िफ़ कहाँ ज़माना हमारी उड़ान से ।
वो और थे जो हार गए आसमान से।।

इन पंक्तियों को चरितार्थ करता जिला पूर्वी चंपारण का एक विद्यालय उत्क्रमित मध्य विद्यालय अजगरवा पूरब,यह विद्यालय अपने सीमित संसाधनों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं बच्चों का सर्वांगीण विकास कर एक मिसाल कायम किया है और निरंतर नई उपलब्धियों के साथ प्रगति पथ पर अग्रसर है।
कौन कहता है की आसमा में सुराख नही हो सकता
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों

जब इंसान में कुछ कर गुजरने की तमन्ना हो, दृढ़ इच्छाशक्ति हो ,अदम्य साहस हो तो असम्भव भी संभव होता हुआ प्रतीत होता है। ऐसा ही कुछ कायापलट हुआ है उत्कृमित मध्य विद्यालय अजगरवा पूरब में। जिस विद्यालय की अपनी कोई जमीन न थी। न ही कोई खास पहचान थी संकुल स्तर पर, आज वह विद्यालय अपने जिले का शान बना हुआ है। ऐसा संभव हुआ है विद्यालय के कर्मठ, लगनशील, बच्चों के प्रति समर्पित भावना से ओत-प्रोत प्रभारी प्रधानाध्यापक अवनीश कुमार के सौजन्य से।

कहा जाता है जब मन में लगन हो और जीवन में कुछ कर गुजरने की चाहत हो तो इंसान बड़ा से बड़ा काम भी चुटकियां बजाते हुए कर लेता है।
उत्क्रमित मध्य विद्यालय अजगरवा पूरब के युवा प्रधानाध्यापक अवनीश कुमार ने अपने कार्यकाल के कम समय में ही वह सब कर दिखाया है जो सुनने और देखने में किसी चमत्कार से कम नहीं लगता।
बात उस विद्यालय की हो रही है जो अपने न्यूनतम साधनों के साथ निरंतर प्रगतिशील है। मात्र दो कक्षा वर्गों वाले इस विद्यालय परिसर में जिस तरह की समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा दी जा रही है ,वह वैसे अन्य विद्यालय के लिए प्रेरक हैं जो हमेशा अपनी संसाधनों का रोना रोते रहते हैं।

"अपने न्यूनतम साधनों के साथ निरंतर प्रगतिशील है। मात्र दो कक्षा वर्गों वाले इस विद्यालय परिसर में जिस तरह की समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा दी जा रही है ,वह वैसे अन्य विद्यालय के लिए प्रेरक हैं जो हमेशा अपनी संसाधनों का रोना रोते रहते हैं।"

एक ही कक्षा में दो तीन कक्षाओं का संचालन होने के बावजूद भी न तो बच्चे में और न ही शिक्षक व प्रधानाध्यापक के चेहरे पर कोई शिकन है। सभी सीखने और सीखाने की प्रक्रिया में व्यस्त हैं। नतीजा यह है कि बच्चे न केवल खेलकूद और सांस्कृतिक आयोजनों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं बल्कि विज्ञान प्रदर्शनी और राष्ट्रीय मेघावृति परीक्षा में भी सफल होते आए हैं।
इस विद्यालय की सबसे बड़ी खासियत असेंबली है, जो किसी भी विद्यालय की गुणवत्ता को परखने की एक कसौटी हो सकता है।
यहाँ प्रतिदिन चेतना सत्र में संविधान की प्रस्तावना के साथ - साथ मौलिक अधिकार व कर्तव्यों का पाठ बाल संसद के 11 मंत्रियों के द्वारा रोचक तरीके से करवाया जाता है। यह क्रियाविधि बच्चों में उनके अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति जागरूक करती है जिससे कि वे एक बेहतर इंसान बन सके।

चेतना सत्र की अन्य नवाचारी गतिविधियां:-

1 इंग्लिश क्विज का आयोजन
2 एंटोनिम्स एंड साइनोनिम्स
3 वर्ड पजल
4 वर्ड्स ऑफ दि डे
5 सप्ताह में तीन दिन हिन्दी में और तीन दिन इंग्लिश में उपरोक्त क्रियाकलाप का क्रियान्वयन
6 मौन शांति पाठ करवाना जिसके अन्तर्गत बच्चे पाँच मिनट मौन रहने का अभ्यास करते हैं।
7 चेतना सत्र के दौरान बच्चों के बीच सुगबुगाहट दूर करने के लिए समय-समय पर बाल संसद के मंत्रियों के द्वारा विभिन्न प्रकार की तालीयाँ बजवाई जाती हैं , जैसे - स्वागत ताली , रॉकेट ताली , वर्षा ताली , वीआइपी ताली आदि ।

बच्चों की टोली अपने विद्यालय में ही नहीं गाँव चौक के चौराहे और नुक्कड़ों पर भी अपनी सांस्कृतिक गतिविधियों के द्वारा समाजोपयोगी संदेश फैलाते हैं।

कक्षा संचालन में मिश्रित कक्षाओं के दौरान भी कई ऐसे अन्य क्रियाकलाप करवाया जाता है , जिससे बच्चे खेल - खेल में सीखने की अवधारणा के जरिए बच्चों का पठन - पाठन संभव हो पाता है और वे पाठ को बेहतर समझ पाते हैं । इस क्रियाकलाप से बेहतर लर्निंग आउटपुट मिल रहे हैं।

प्रधानाध्यापक अवनीश कुमार विद्यालय में बच्चों और शिक्षकों के साथ क्रियेटिविटी करते हुए।

2013 में जब अवनीश कुमार की नियुक्ति इस विद्यालय में हुई तो उस समय यह विद्यालय शैक्षिक,सांस्कृतिक तथा अन्य कई पैमानों पर काफी पिछड़ा हुआ था लोग विद्यालय को शिक्षांगन की जगह भोजनांगन समझ रहे थे। विद्यालय की अफनी ज़मीन नहीं थी तो विद्यालय भवन के चारों ओर अतिक्रमण का बसेरा था। कहीं गोबर का थान तो कहीं पशुपालन का धंधा। विद्यालय के समीप एक पोखरा था जिसमें बकायदा ग्रामीण और शिक्षक समूह मतस्य पालन किया करते थे। संक्षेप में कहूं तो उस प्रांगण में शिक्षा के अलावे सारे धंधे हुआ करते थे।

अवनीश कुमार ने पहल की और जिलाधिकारी एवं जिला शिक्षा पदाधिकारी को इस बावत पत्र लिखा।
जिलाधिकारी महोदय ने संज्ञान लिया।
विद्यालय में अवनीश कुमार के आगमन से पूर्व अन्य शिक्षक यह मानते थे कि बिना सरकारी योजनाओं के बंद किये हुए सरकारी विद्यालयों की दशा नही बदल सकती।
उक्त दयनीय स्थिति में भी अवनीश कुमार बिना विचलित हुए अपना शिक्षण कार्य अन्य शिक्षको की सहायता से प्रारंभ किया समय बदला और बदलाव दिखने लगा और परिणाम भी दस्तक देने लगा बच्चे अनुमंडल स्तरीय कार्यक्रमों में चयनित होने लगे और आज अजगरवा पूरब के बच्चे केवल जिला स्तर ही नही बल्कि राज्य स्तरीय बिभिन्न प्रतियोगिताओ में जिले का प्रतिनिधित्व कर विद्यालय का यशगान बढ़ाये है।
यह विद्यालय आज केवल शिक्षा ही नही बल्कि सांस्कृतिक एवम खेलकूद में भी कई पुरस्कार पा चुके है ।राष्ट्रीय आय सह मेधा छात्रवृति परीक्षा परिणाम हो या सेंट्रल हिन्दू स्कूल काशी हिन्दू विश्वविद्यालय(बी एच यू) में प्रवेश परीक्षा हो या सिमुलतला आवासीय विद्यालय की प्रवेश परीक्षा के प्री में भी यहां के बच्चों ने सफलता पायी।

2017 से 2019 के इस छोटे कार्यकाल में ही जिस प्रकार अवनीश सर ने अपने विद्यालय का कायाकल्प किया है वह अचंभित करती है।
प्रोजेक्टर के माध्यम से प्राथमिक स्तर के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करते हुए देखना एक आनंददायक अनुभूति है।
छोटे - छोटे बच्चे टीवी पर राइम्स गाना और कहानियों के जरिए भाषा की बारीकियों को सीखते हैं।
इस विद्यालय को सजाने सवारने और आज इस मुकाम तक पहुचाने में शिक्षको के साथ ही बाल संसद एवम मीना मंच की प्रमुख भूमिका रही है
अवनीश कुमार ने विद्यालय की वरिष्ठ शिक्षिका उषा कुमारी की सहायता से पहले से चली आ रही निष्क्रिय एवम केवल कागजो तक सीमित बाल संसद एवम मीना मंच के कार्यो को वास्तविक धरातल पर उतारा। उन्हें उनके कार्यो ,दायित्वो,एवम अधिकारों के प्रति सजग कराया। प्रत्येक मंत्री को अपने मंत्रयलयो के कार्यो के प्रति जवाबदेह बनाया गया जिसका अभूतपूर्व परिणाम देखने को मिला और आज विद्यालय के दैनिक क्रियाकलापो में ये बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे है तथा विद्यालय प्रबंधन की रीढ़ की हड्डी बने हुए है।

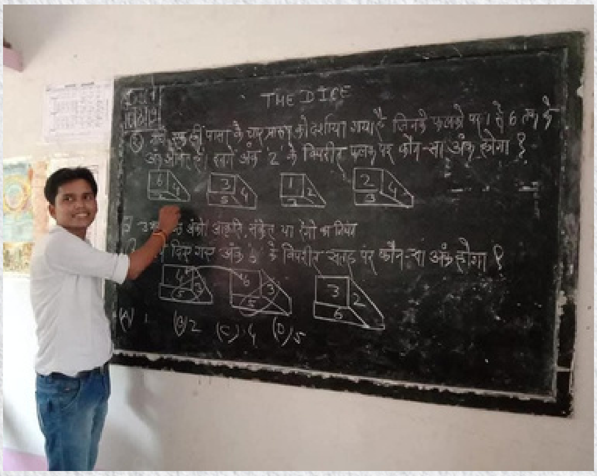

विद्यालय में इस परिवर्तन में विद्यालय शिक्षा समिति की भी काफी भूमिका है जो समय समय पर आयोजित गोष्ठि में सदस्यो ने भाग लेकर विद्यालय विकास हेतु अपने महत्वपूर्ण सुझाव देते रहते है।

विद्यालय के शिक्षक भी शिक्षा के क्षेत्र में आये हुए परिवर्तन से अद्यतन रहने के लिए अपना अध्ययन जारी रखे हुए है।

प्रधान शिक्षक अवनीश कुमार अभी हाल ही में राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा शिक्षाशास्त्र विषय से उत्तीर्ण किया ,शिक्षिका उषा कुमारी ने सी बी एस सी द्वारा आयोजित सी टी ई टी की परीक्षा ,प्रदीप कुमार ने बी एड कर एम ए की परीक्षा,रत्नेश कुमार ने एम ए ,एवम विनय कुमार ने बी एड की परीक्षा उत्तीर्ण किया।

विद्यालय में आये हुए इस परिवर्तन से प्रभावित होकर जो ग्रामीण पहले विद्यालय के विकास कार्यो में निष्क्रिय रहते थे आज उनके व्यवहार में सकारात्मक बदलाव आया है और आज समस्त ग्रामीण अपने विद्यालय को मॉडल के रूप में गर्व पूर्वक अन्य लोगो के सामने पेश करते है तथा आवश्यकतानुसार विद्यालय विकास में योगदान देने को आतुर दिखते है।

आज अवनीश कुमार बीपीएससी द्वारा आयोजित व्याख्याता परीक्षा में उतीर्ण होकर एक शिक्षक से व्याख्या बन चुके हैं।

अवनीश कुमार की मेहनत रंग लाई और इस विद्यालय को अपनी ज़मीन एकड़ में अलॉट कर दी गई। उससे पहले ही अवनीश कुमार ने व्याख्याता पद पर प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, विष्णुपुर, बेगूसराय में पदभार ग्रहण कर लिया था। लेकिन उक्त विद्यालय को अपनी ज़मीन और प्रतिष्ठा अवनीश जी की कड़ी मेहनत के फलस्वरूप ही साकार हुआ।

टीचर्स ऑफ बिहार इस विद्यालय व विद्यालय परिवार के उज्ज्वल भविष्य की अनंत शुभकामनाएं देते हैं।

अधिकारी गाथा

समीर परिमल
राज्य कर उपायुक्त
वाणिज्य कर विभाग
बिहार

हम फ़क़ीरों के क़ाबिल रही तू कहाँ जा अमीरों की कोठी में मर ज़िंदगी

समीर परिमल

समीर परिमल
जन्म स्थान --ग्राम-भरतपुरा, पो+थाना- हथुआ,
जिला- गोपालगंज (बिहार)
शिक्षा -स्नातक विज्ञान, एल एल. बी.,
पी जी डी बी ए(एच आर)
सम्प्रति -राज्य-कर उपायुक्त, वाणिज्य -कर विभाग, बिहार।
वर्तमान आवास-पटना।

समीर परिमल
राज्य कर उपायुक्त
वाणिज्य कर विभाग
बिहार

समंदर न इतरा कि तेरे मुक़ाबिल
मेरी आँख का एक कतरा बहुत है

समीर परिमल के माता-पिता

> अपनी प्रतिभा और बौद्धिक कौशल के कारण बचपन से ही परिवार से समाज तक में इनकी अलग पहचान रही। लालन पालन ग्रामीण परिवेश में होने के बावजूद चूंकि पारिवारिक पृष्ठभूमि पूर्ण शैक्षिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक थी इसलिए अध्ययन, अध्यापन, लेखन एवं संगीत में अभिरुचि इन्हें विरासत में मिली।

बिहार के नामचीन शायरों में शुमार समीर परिमल का जन्म ग्राम भरतपुरा, पो हथुआ, जिला गोपालगंज (बिहार) के श्री मधुसूदन प्रसाद गणित शिक्षक,(प्रधानाध्यापक, इडेन उच्च विद्यालय, हथुआ)एवं धर्म परायणा, विदुषी तारा देवी की चौथी संतान के रूप में हुआ। माता पिता का असीम प्यार और दुलार मिला। अपनी प्रतिभा और बौद्धिक कौशल के कारण बचपन से ही परिवार से समाज तक में इनकी अलग पहचान रही। लालन पालन ग्रामीण परिवेश में होने के बावजूद चूंकि पारिवारिक पृष्ठभूमि पूर्ण शैक्षिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक थी इसलिए अध्ययन, अध्यापन, लेखन एवं संगीत में अभिरुचि इन्हें विरासत में मिली। हिन्दी सिनेमा और सिनेमा के गीतों से इनका विशेष अनुराग रहा।

बीपीएससी परीक्षा में अंतिम रुप से चयन होने पर मुंह मीठा करती हुई माँ

हिन्दी के प्रथम राष्ट्रकवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों -"तेजस्वियों की आयु भी देखी भला जाती कहीं" को चरितार्थ करते हुए मैट्रिक की शिक्षा इन्होंने खेल खेल में ही प्रथम श्रेणी के साथ हासिल कर ली। विज्ञान स्नातक (भौतिकी प्रतिष्ठा) प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करने के बाद करियर के विषय में सोचने के लिए उद्यत हुए और फिर शुरू हुआ एक लम्बा संघर्षमय सफ़र जो छब्बीस वर्षों तक चला। पहली बार बी पी एस सी की परीक्षा 1992 में दिए थे और साक्षात्कार तक पहुंचे परन्तु 2018 में बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा अंतिम रूप से उत्तीर्ण कर बिहार वित्त सेवा के माध्यम से राज्य कर सहायक आयुक्त बने। लेकिन सबसे बड़ी बात यह रही कि इस संघर्ष के बीच कोई कार्य रुका नहीं। 1999 में बी पी एस सी द्वारा आयोजित प्राथमिक शिक्षक की परीक्षा में जिला में प्रथम स्थान प्राप्त कर 18 साल बिहार सरकार में प्राथमिक शिक्षक की नौकरी किए। शिक्षक के रूप में भी अपनी मेधा और अध्यापन कला के कारण छात्रों के भी प्रिय और आदर्श रहे। शिक्षण कार्य के साथ ही उचित समय पर 19 अप्रैल 2000 में सुश्री रूपांजलि के साथ गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर एक आदर्श शिक्षक , माता पिता, भाई बहन, पत्नी और तीन बच्चों के पिता के दायित्व का निर्वहन करते हुए अपने अंतिम लक्ष्य को प्राप्त किए।

> हुकूमत कब तलक ग़ाफ़िल रहेगी
> कोई गुमनाम बस्ती चीख़ती है
> ग़रीबी आज भी भूखी ही सोई
> मेरी थाली में रोटी चीखती है।

> सर पे इल्ज़ाम लिए जाते हैं
> ख़्वाब आँखों को दिए जाते हैं

झलकियां

साहित्यिक गतिविधियों और लेखन का कार्य तो छात्र जीवन से ही आरम्भ था परंतु 2012/13 से विशेष सक्रियता आई। परिणामस्वरूप "सामयिक परिवेश" पत्रिका, "यादों के दरीचे", यात्रा संस्मरण संग्रह "सफर - जिंदगी की तलाश" और कई पुस्तकों /साझा संग्रहों का सम्पादन किया।

निरंतर पत्र पत्रिकाओं में ग़ज़ल और लेख का प्रकाशन, दूरदर्शन और आकाशवाणी से हमेशा कार्यक्रम का प्रसारण जारी रहा। देश के विभिन्न भागों में बड़े बड़े कवि सम्मेलनों एवं मुशायरों में बेह्तरीन प्रदर्शन कर अपार लोकप्रियता हासिल की।

प्रकाशन

ग़ज़ल संग्रह - "चंद क़तरे"(2014)
"दिल्ली चीखती है"(2017)

वर्ष 2016 में कुमार विश्वास के संचालन में एबीपी न्यूज चैनल द्वारा आयोजित "महा कवि कविता कॉन्टेस्ट"के ग्लोबल विजेता के रूप में समीर परिमल का चयन किया गया था।

हर धड़कते दिल में एक तूफ़ान होना चाहिए
ज़िंदगी का भी कोई उन्वान होना चाहिए

साहित्यिक गतिविधियां

समीर परिमल जी को विभिन्न संस्थाओं से मिलने वाले महत्वपूर्ण सम्मान-पुरस्कार

- शाद अज़ीमाबादी सम्मान 2018
- शीतल प्रसाद उपाध्याय ग़ज़ल सम्मान 2016
- उत्तर प्रदेश में दुष्यंत कुमार ग़ज़ल सम्मान 2017
- भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई कला साधना सम्मान 2016
- गहमर गाजीपुर में साहित्य सरोज शिक्षा प्रेरक सम्मान 2017
- देहरादून, उत्तराखंड में साहित्य रत्न सम्मान 2017(विधानसभा अध्यक्ष के हाथों)
- हरिवंश राय बच्चन स्मृति सम्मान -2018
- पांडेय राम अवतार अरुण सम्मान -2018
- मां मालती देवी स्मृति सम्मान 2018
- बिहार काव्य गौरव सम्मान 2018

> न समझो फ़कत एक तस्वीर इसको
> किसी की मुकम्मल कहानी है साहिब
> समीर परिमल

- एचीवर्स भूषण सम्मान 2020
- ग्लोबल बिहार एक्सीलेंस अवार्ड -2019
- गोपी बल्लभ सहाय सम्मान
- महादेवी वर्मा सम्मान -2021
- नवगीतिका सम्मान
- शाइनिंग आइकन -2022 बिहार अवार्ड
- प्रेमनाथ खन्ना आदि शक्ति सम्मान 2022
- गोपालगंज का गौरव सम्मान 2022(जिला प्रशासन द्वारा)
- पंडित राजकुमार शुक्ल स्मृति सम्मान 2022
- राजू श्रीवास्तव कॉमेडी अवार्ड सीजन2-2023 इत्यादि।

डॉ. कुमार विश्वास के मार्गदर्शन में ABP न्यूज़ महाकवि कविता प्रतियोगिता (2016) के विजेता रहे हैं।
आज, वह कड़ी मेहनत, विनम्रता और साहित्यिक उत्कृष्टता के प्रतीक हैं—एक ग्रामीण परिवेश से निकलकर शासन और साहित्य, दोनों ही क्षेत्रों में अपनी अमिट छाप छोड़ रहे हैं।

खबरों में समीर परिमल

शिक्षक बने सहायक आयुक्त

पटना (आशिप्र)। बिहार लोकसेवा आयोग की 56-57वीं परीक्षा में सफलता प्राप्त कर राज्य कर सहायक आयुक्त बने शिक्षक समीर परिमल के लिए राकीय कन्या मध्य विद्यालय (राजभवन) में सम्मान सह विदाई समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए गर्दनीबाग अंचल के विद्यालय अवर निरीक्षक अरमेंद्र कुमार ने कहा कि समीर परिमल ने सहायक शिक्षक से सहायक आयुक्त तक का सफर तय कर हमें गौरवान्वित किया है। पटना सदर के निकासी एवं व्ययन पदाधिकारी संजीव कुमार सिंह ने कहा कि यह सिर्फ सम्मान समारोह नहीं बल्कि एक प्रेरक समारोह है। समीर परिमल ने सबके सामने एक आदर्श स्थापित किया है। विद्यालय की शिक्षिका बानो ने समीर परिमल को एक आदर्श शिक्षक बताते हुए उनके व्यक्तित्व की प्रशंसा में कविता पढ़ी। समारोह को संकुल समन्वयक संतोष कुमार साह, प्रभात कुमार आदि ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर बच्चों ने भव्य एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की भी प्रस्तुति दी। इससे पूर्व समीर परिमल को अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। समीर परिमल ने अपने संबोधन में सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं इस विद्यालय से कभी दूर जा ही नहीं सकता, बच्चों और शिक्षकों का स्नेह ही मेरी पूंजी है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विद्यालय के प्रधानाध्यापक मो. अख्तर इमाम ने श्री परिमल को योग्य, मेहनती एवं ईमानदार शिक्षक बताते हुए उन्हें नई पारी के लिए शुभकामनाएं दीं।

सम्मानित किए गए राज्य कर सहायक आयुक्त समीर

बिहार लोक सेवा आयोग की 56-59वीं परीक्षा में सफलता प्राप्त कर राज्य कर सहायक आयुक्त बने समीर परिमल के लिए राजकीय कन्या मध्य विद्यालय में गुरुवार को सम्मान सह विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अमरेंद्र कुमार, संजीव कुमार सिंह, फौजिया बानो, संतोष कुमार साह, प्रभात कुमार आदि ने भी विचार व्यक्त किए। इससे पूर्व समीर परिमल को अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। समीर ने कहा कि वे मूल रूप से शिक्षक हैं और शिक्षक ही रहेंगे।

CITY — Sunday, 24 August, 2025, Patna — 11

A Night of Poetry, Passion, and Parimal

@AT Reporter

On the auspicious occasion of Janmashtami, a grand Kavi Goshti (poetic gathering) was organized to celebrate the birthday of renowned poet and State Deputy Commissioner of Taxes Sameer Parimal. The event was hosted by Bandhu Entertainment and S Square Events & Marketing, and witnessed a confluence of eminent poets, writers, and dignitaries. The evening was presided over by acclaimed poet Dr. Qasim Khurshid, while young poet and actor Avinash Bandhu conducted the session. The gathering was graced by Dr. Shakeel Moin, celebrated ghazal writer from Champaran as Chief Guest, and noted poet Sanjay Kumar Kundan as Special Guest, alongside several literary and administrative personalities of Bihar. The poetic ambience was lit with recitations from celebrated voices. Sameer Parimal shared verses filled with emotion: "Zindagi zindagi ho gayi. Aap jo humsafar ho gaye.." Dr. Qasim Khurshid enthralled the audience with evocative lines on Krishna, while Dr. Shakeel Moin's ghazals reflected depth and longing. Sanjay Kumar Kundan's verses questioned the essence of love, while poets like Dr. Ramnath Shodharthi and Aradhana Prasad added layers of wit, romance, and reflection. The evening saw participation from a galaxy of poets and dignitaries including Sudhir Kumar Purvey, Akash Kumar, Dr. Rashmi Ranjita, Dr. Nasar Alam, Anisur Rahman, Prof. Ziauddin, Krishna Samiddh, Dr. Poonam Sinha Shreyasi, RJ Sweta Surbhi, and many others. The Kavi Goshti turned into a cultural celebration, blending Parimal's birthday with the spirit of poetry, leaving the audience immersed in melody, meaning, and magic of words.

...क्षक से सहायक आयुक्त बने स... को विद्यालय परिवार ने दी विदा...

(एसएनबी)। ... लोक सेवा ... की 56-59वीं ... में सफलता प्राप्त ... ज्य कर सहायक ... त बने शिक्षक ... परिमल के लिए ... य कन्या मध्य ... य, राजभवन में ... सह विदाई समारोह का आयोजन किया ... इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में ... त करते हुए गर्दनीबाग अंचल के विद्यालय ... निरीक्षक अमरेंद्र कुमार ने कहा कि समीर ... ने सहायक शिक्षक से सहायक आयुक्त ... सफर तय कर हमें गौरवान्वित किया है। ... सदर के निकासी एवं व्ययन पदाधिकारी ... कुमार सिंह ने कहा कि यह सिर्फ सम्मान- ... ह नहीं बल्कि एक प्रेरक समारोह है। समीर ... ने सबके सामने एक आदर्श स्थापित किया

समीर परिमल को विदाई देता विद्यालय परिवार।

है। विद्यालय की ... फौजिया बानो ... भावुक संबोधन ... परिमल को ए... शिक्षक बताते ... व्यक्तित्व की ... कविता पढ़ी। स... संकुल समन्वय... कुमार साह, प्र... आदि ने भी संबोधित किया। इस अवसर ... ने भव्य एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्र... प्रस्तुति दी। इससे पूर्व समीर परिमल को ... एवं प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित कि... समीर परिमल ने अपने संबोधन में सभी ... व्यक्त करते हुए कहा कि वे मूलतः शिक्ष... शिक्षक ही रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता ... विद्यालय के प्रधानाध्यापक अख्तर इम... परिमल को योग्य, मेहनती एवं ईमानदा... बताते हुए उन्हें नई पारी के लिए शुभका...

दैनिक भास्कर — छपरा 23-01-2026

हथुआ मार्केट में शायरी का जलवा: "जान दे दें, बिहार वाले हैं..." बन गया जनभावना का उद्घोष

छपरा| हथुआ मार्केट में आयोजित कवि सम्मेलन और मुशायरे ने अदब, सामाजिक चेतना और बिहार की सामूहिक अस्मिता को जीवंत कर दिया। डिप्टी टैक्स कमिश्नर और शायर समीर परिमल के शेर "जान दे दें, बिहार वाले हैं" ने महफिल को केवल तालियों से नहीं, बल्कि आत्मगौरव की ऊर्जा से भर दिया। उनका यह शेर बिहार की संघर्षशीलता, संयम और सांस्कृतिक बाहर का प्रतीक बन गया। युवा कवि अस्तित्व अंकुर और कवि आशुतोष द्विवेदी ने सामाजिक सरोकारों और व्यक्तिगत संवेदनाओं को बेहतरीन अंदाज में पेश किया। डॉ. अमित रंजन की ग़ज़लों ने श्रोताओं को रोमानी और भावनात्मक यात्रा पर ले गया। इस मौके पर व्यवसायी और समाजसेवी सैयद कैसर हसन बब्लू खाँ के नये प्रतिष्ठान 'हंसेब कुर्ता महल' का उद्घाटन भी किया गया। कवि सम्मेलन का संचालन सुहैल अहमद हाशमी ने किया। पूरी महफिल ने साबित कर दिया कि शायरी सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, लोकतांत्रिक संवाद और अस्मिता का सार्वजनिक मंच है। समीर परिमल के शेर ने इस बात को इतिहास के दस्तावेज में बदल दिया, जिसे सभी ने न केवल सुना, बल्कि अनुभव किया।

आप जो मेरे हमसफर हो गए, ऐब सारे जो थे सब हुनर हो गए... पर खूब बजी ताली

सिटी रिपोर्टर.पटना

राज्य कर उपायुक्त और मशहूर शायर समीर परिमल के जन्मदिवस पर मंगलवार को काव्य गोष्ठी आयोजित हुई। समीर परिमल ने अपने अंदाज में सुनाया- जिंदगी, जिंदगी हो गई, आप जो हमसफर हो गए, ऐब सारे जो थे सब हुनर हो गए...। इस कार्यक्रम का आयोजन बंधु एंटरटेनमेंट और एस स्कवायर इवेंट्स की ओर से किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शायर डॉ. कासिम खुरशीद ने की। संचालन युवा कवि-अभिनेता अविनाश बंधु ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में गजलकार डॉ. शकील मोईन और विशिष्ट अतिथि संजय कुमार कुंदन मौजूद रहे। इस मौके पर राज्य के कई अधिकारी, कवि और शायर शामिल हुए और सबने अपनी-अपनी रचनाओं से महफिल को सजाया। कार्यक्रम में डॉ. रामनाथ शोधार्थी, नीलांशु रंजन, कुमार संभव, आराधना प्रसाद, रवि किशन, रेखा भारती मिश्रा, अमृतेश कुमार मिश्रा, डॉ रश्मि रंजीता, संगीता मिश्रा, सुधीर कुमार पूर्वे, जलेश्वर प्रसाद, आरजे श्वेता सुरभि, असर फरीदी और डॉ नसर आलम नसर सहित कई कवियों ने बेहतरीन शेर और गजलें पेश कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस मौके पर लेखक रत्नेश्वर, फिल्म निर्माता कृष्ण समिद्ध, आनंद बिहारी प्रसाद, सुहैल फारुकी, रोबिन सिंह, आलोक कुमार, अशोक कुमार, ज्योति, रविंद्र कुमार, सारिका चौधरी एवं अन्य गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

समीर और सुजीत ने बीपीएससी में लहराया

सुजीत गोपालगंज के पूर्व डीएम के बेटे हैं जबकि समीर भरतपुर के रहने वाले हैं

सिटी रिपोर्टर|हथुआ

हथुआ के सोहागपुर पंचायत के भरतपुरा गांव के रहने वाले मधुसूदन श्रीवास्तव के पुत्र समीर परिमल एवं गोपालगंज के पूर्व डीएम मुरलीधर राय के पुत्र शिक्षक सुजीत कुमार राय ने बीपीएससी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर क्षेत्र का नाम रौशन किया है। हथुआ के रहनेवाले समीर पहले अध्यापन, फिर साहित्य और अब बिहार के वित्त विभाग को महकाने के लिए तैयार हैं। परिमल युवा कवि गजल सम्राट को कई राज्यों से साहित्य के क्षेत्र में सम्मानित किया गया है। समीर परिमल के चयन के बाद उन्हें बधाई देने वालों का तांता लगा है। शनिवार को घोषित बीपीएससी के परिणाम में उन्हें 194वां रैंक मिला और उनका चयन बिहार वित्त सेवा के अंतर्गत सहायक आयुक्त राज्य कर पद पर हुआ है। श्री परिमल पहली बार वर्ष 1992 में 38वीं बीपीएससी की परीक्षा में शामिल हुए थे। जिसमें वे साक्षात्कार तक पहुंचे थे। लेकिन उनका चयन नहीं हो सका। इसी बीच लगातार परीक्षा देते रहे। पिछले वर्ष भी उन्होंने साक्षात्कार दिया था। वर्ष 1999 में उन्होंने बीपीएससी द्वारा सहायक शिक्षक की परीक्षा में गोपालगंज जिले में टॉप किया था। फिलहाल वह पटना राज भवन स्थित आदर्श कन्या मध्य विद्यालय में शिक्षक के तौर पर अपनी सेवा दे रहे हैं। इसके अलावा एक प्रसिद्ध कवि व शायर के रूप में भी उनकी राष्ट्रीय पहचान है। उनके चयन पर उनके पैतृक गांव व मनीहारपर स्थित ससुराल में खुशी की लहर दौड़ गयी। बड़ी संख्या में लोगों ने अपनी बधाइयां दीं। हथुआ संस्कृत कॉलेज में पदस्थापित उनकी बड़ी बहन डॉ.नीलम श्रीवास्तव,ससुर सच्चिदानंद प्रसाद,बड़े साले राजेश कुमार ने खुशी जाहिर किया। उनका कहना है कि संघर्ष व असफलताओं से कभी डरना नहीं चाहिए। यहां बताते चलें कि समीर के पिताजी स्व.मधुसूदन प्रसाद हथुआ के डॉ.राजेन्द्र प्रसाद उच्च विद्यालय में हेडमास्टर पद से अवकाश ग्रहण किए थे।

सुजीत बने जेल सुप...

गोपालगंज जिले के पूर्व जिलाधिकारी मुरलीधर राय के पुत्र ए... विद्यालय हथुआ में शिक्षक सुजीत कुमार राय ने भी बिहार लो... परीक्षा में सफलता प्राप्त कर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। ... उनकी शिक्षा इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से हुई है। इनके पिता ... घर सिवान जिले के पचरुखी में पड़ता है। उनका चयन जेल ... सफलता का श्रेय अपने दिवंगत आईएएस पिता मुरलीधर राय ... कि आज सफलता को देखने के लिए पिता इस दुनिया में नहीं ... कहते हैं कि मेहनत का कोई विकल्प नहीं है। ईश्वर पर और ... रख होंगे। यहां बताते चलें कि इनके पूर्व 2007 में संघ लोक ... साक्षात्कार दिया था। लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली थी।

बिहार ... सरकार
कार्यपालक अभियंता का ...

शिक्षक से राज्य कर आयुक्त बने समीर की विदाई

...टना|मध्य विद्यालय राजभवन के ...क्षक समीर परिमल को गुरुवार को ...दाई दी गई। उनका चयन सहायक ...युक्त के पद पर हुआ है। मुख्य ...तिथि गर्दनीबाग अंचल के अवर ...रीक्षक अमरेंद्र कुमार ने कहा कि ...मीर परिमल ने सहायक शिक्षक से ...हायक आयुक्त तक का सफर तय ...र हमें गौरवान्वित किया है। संजीव ...मार सिंह ने कहा कि यह एक प्रेरक ...मारोह है। शिक्षिका फौजिया बानो ने ...न्हें आदर्श शिक्षक बताया। संकुल ...मन्वयक संतोष कुमार साह, प्रभात ...मार ने भी संबोधित किया। समीर परिमल ने सभी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि वे शिक्षक हैं और शिक्षक रहेंगे। विद्यालय मेरा परिवार है। अध्यक्षता प्रधानाध्यापक मो. अख्तर इमाम ने की। इस मौके पर विद्यालय की शिक्षिका मीरा कुमारी, चंद्रकला देवी, अशोक कुमार, भावना,पुष्पा, सुशीला एक्का मौजूद रहीं। संचालन किया कुमारी सुनीता ने की।

हिन्दुस्तान

सदानीरा महोत्सव का हुआ आगाज, कवियों ने जमायी महफिल

- एक से बढ़ कर एक कविता प्रस्तुत कर कवियों ने खूब लूटी वाहवाही
- गजल सुनकर दर्शक हुए मंत्र मुग्ध, देर रात तक बहती रही साहित्य की धारा

कुमारकोट में शनिवार को सदानीरा महोत्सव का उद्घाटन करते अतिथि शोक पांडेय, रवि प्रकाश मणि त्रिपाठी, शिवकुमार उपाध्याय व अन्य।

खुशबू कुमारी

गुरु की महत्ता

जब लगे कि सारे रास्ते हो गए बंद
जिंदगी से हो गए तंग
छिड़ गई हो आपस में जंग
तब
खुद को थोड़ा संभालना
एकांत बैठना
आंखे बंद कर
थोड़ा मुस्कुराना
अपने गुरु को याद कर
सब कुछ उनको समर्पित करना
फिर देखना
जीवन में एक नई राह मिलेगी
जिस पर चल कर
सारे रास्ते खुल जाएँगे
और आप शांति पाएँगे।
याद रखना ये बात
गुरु का मार्गदर्शन यदि रहे साथ
हारी बाजी भी जीत जाएँगे
इस हाहाकार वाली दुनियाँ में
परम शांति को पाएँगे।
गुरु का सदैव मार्गदर्शन रहे
बस यही मेरी कामना रहे।

खुशबू कुमारी
मध्य विद्यालय
बलुआचक
जगदीशपुर भागलपुर

प्रगाथा

आपकी गाथाओं का स्वागत है

क्या आपके पास भी ऐसी प्रेरणादायक कहानियाँ, अनुभव या गाथाएँ हैं जो समाज को नई दिशा दे सकती हैं?
तो “प्रगाथा” ई-पत्रिका आपके लिए एक सशक्त मंच है।
हम आमंत्रित करते हैं आपकी—

- विद्यालय, शिक्षक एवं छात्रों की सफलता की कहानियां
- विद्यालय से जुड़ी हुई कविताएँ
- शैक्षिक नवाचार
- सामाजिक सरोकार से जुड़ी रचनाएँ

अपनी रचनाएँ हमें भेजें और बनें “प्रगाथा” परिवार का हिस्सा।
अपनी रचना साझा करने के लिए संपर्क करें:

9304268005

Sansar.seema777@gmail.com